इकाई 1 संरचनात्मक प्रकार्यवाद*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 बौद्विक प्रभाव

- 1.2.1 क्षेत्रीय शोधकार्य की परम्परा
- 1.2.2 दर्खाइमीय परम्पराः रैडक्लिफ–ब्राउन में बौद्विक परिवर्तन

1.3 रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित सामाजिक संरचना की अवधारणा

- 1.3.1 सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन
- 1.3.2 सामाजिक संरचना और सामाजिक संस्थाएं
- 1.3.3 संरचनात्मक निरंतरता (structural continuity) और संरचनात्मक रूप (structural form)

1.4 पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में संरचनात्मक व्यवस्था

- 1.4.1 क्षेत्रीय आधार
- 1.4.2 जनजातियाँ
- 1.4.3 मोइटी
- 1.4.4 टोटम समूह

1.5 सारांश

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपके लिए संभव होगाः

- उन बौद्विक प्रभावों का उल्लेख करना जिनकी सहायता से रैडक्लिफ–ब्राउन के सामाजिक नृशास्त्र का विशिष्ट स्वरूप तैयार हुआ;
- रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित "सामाजिक संरचना" तथा उससे संबंधित अन्य अवधारणाओं की व्याख्या करना;
- रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा प्रस्तुत एक उदाहरण के माध्यम से इन अमूर्त अवधारणाओं को भली–भाँति समझना।

1.1 प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम जो समाजशास्त्रीय विचारको (2) जिससे एक खंड कुछ प्रारंभिक समाजशास्त्रीयों के काम को दर्शाता है। जिन्होंने संरचना, प्रकार्य और समाज के

*यह इकाई ई.एस.ओ. 13 की इकाई 25 से अंगीकृत एक प्रो. किरण्मयी भुषी द्वारा संशोधित हैं।

अध्ययन में उनके अंत संबधों की अवधारणा जैसे सिद्वांतो पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस इकाई में हम ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन की रचना और संरचनात्मक प्रकार्यवाद पर उनकी व्याख्या के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

ऐडम कूपर (1975:51) के अनुसार "मलिनॉस्की रीति रिवाजों के पीछे मानवीय रूचि के प्रति अपनी जीवंत" जागरूकता के कारण सामाजिक नृशास्त्र में एक नया यथार्थवाद लाया जबकि रैडक्लिफ–ब्राउन ने नये क्षेत्रीय शोधकर्ताओं की सहायता के लिए स्पष्ट, ठोस और व्यवस्थित अवधारणाओं का समावेश किया। "इस इकाई में हमने इन्ही अवधारणाओं में से एक अर्थात सामाजिक संरचना का अध्ययन किया है।"

अपने काम को कुछ अधिक सरल बनाने के लिए पहले हमने संक्षेप में उन बौद्विक प्रभावों का अध्ययन किया है जो रैडक्लिफ–ब्राउन के सामाजिक नृशास्त्र का विशिष्ट स्वरूप तैयार करने में सहायक हुए। यह इकाई का पहला भाग होगा। दुसरे भाग में इस इकाई के मुख्य विषय विष अर्थात् रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा सामाजिक संरचना के विश्लेषण की चर्चा की जाएगी।

तीसरे और अंतिम भाग में पश्चिमी आस्ट्रेलिया की कुछ जनजातियों की संरचनात्मक विशेषताओं का विश्लेषण किया जायेगा, जिनका अध्ययन रैडक्लिफ–ब्राउन ने किया था। इन ठोस उदाहरणों द्वारा अमूर्त अवधारणाएं स्पष्ट हो सकेगी।

1.2 बौद्विक प्रभाव

जैन (1989: 1) के अनुसार आधुनिक सामाजिक नृशास्त्र दो विशिष्ट परंपराओं का सम्मिश्रण है। एक ओर तथ्यपरक, आनुभाविक नृजातीय परंपरा है, (जिसके बारे में आपने पिछली दो इकाइयों में पढ़ा है) तो दूसरी ओर समाज को एक समग्रता के रूप में देखने वाले (holistic) विश्लेषण की परंपरा है। पहले का प्रतिनिधित्व ब्रिटिश और अमरीकी सामाजिक नृशास्त्र करता है तो दूसरे का फ्रांसीसी समाजशास्त्र, जिस पर एमिल दर्ख़ाइम हावी रहा। रैडक्लिफ–ब्राउन के सामाजिक नृशास्त्र पर इन दोनों परंपराओं की छाप है। सबसे पहले यह इेखें कि रैडक्लिफ–ब्राउन के विचारों पर क्षेत्रीय शोधकार्य की परंपरा का क्या प्रभाव पड़ा।

बीसवी षताब्दी के प्रारंभिक चरण में नृजातिविवरण में विशिष्ट समाजों के विस्तृत अध्ययन के लिए उत्साह था। फलस्वरूप अनेक नृजातिविवरण वाले ग्रंथ प्रकाशित हुए। इन अध्ययनों से ब्रिटेन में एक नए विषय, सामाजिक नृशास्त्र, के विकास की पृष्ठ भूमि तैयार हुई। सामाजिक नृशास्त्र तथा समाजशास्त्र एक–दूसरे से बहुत जुड़े हुए विषय है। गैर–पश्चिमी समाजों के अध्ययन पर आधारित सामाजिक नृशास्त्र के निष्कर्ष प्रायः सभी प्रकार के समाजों के अध्ययन के लिए भी उपयुक्त होते है। यही कारण है कि 1920 और 1930 के बीच सामाजिक नृशास्त्र के विकास ने समाजशास्त्रीय चिंतन की प्रगति में भी मदद पहुँचाई। मलिनॉस्की के नेतृत्व में नृशास्त्रियों द्वारा अध्ययन के लिए प्रत्यक्ष प्रेक्षण को आधार बनाने पर बल दिए जाने से समाजशास्त्रीय सिद्वांत के विकास में महत्वपूर्ण मोड़ आया। सामाजिक नृशास्त्रियों का कहना है कि नृजातिविवरण समाज विशेष में स्वयं जाकर एक वर्ष

अथवा उससे अधिक समय तक किए गए अध्ययन के आधार पर किए जाने चाहिए। उनकी यह भी मान्यता है कि मूलतः समाज विशेष का अध्ययन उसी समाज की पूरी जानकारी के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने ऐसे लोगों की आलोचना की, जिन्होंने मानवता के इतिहास की पुनर्रचना मात्र के लिए आदिम संस्कृतियों का अध्ययन करना ज़रूरी समझा।

रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा प्रचलित सामाजिक नृशास्त्र में इन दोनों परंपराओं के लक्षण है। आइए पहले रैडक्लिफ–ब्राउन के कार्य पर क्षेत्रीय शोधकार्य की परंपरा पर विचार करते है।

1.2.1 क्षेत्रीय शोधकार्य की परंपरा

रैडक्लिफ–ब्राउन जिन दिनों कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था, उन दिनों वह विश्वविद्यालय एक बौद्विक संपन्नता के दौर से गुजर रहा था। शिक्षक और विद्यार्थी निस्संकोच विचार–विमर्श और वाद–विवाद करते थे। रैडक्लिफ–ब्राउन 1904 में डब्ल्यू. एच. आर. रिवर्स का पहला नृशास्त्रीय विद्यार्थी हुआ। रिवर्स और हैडन प्रसिद्ब टोरेस स्ट्रेट्स अभियान में भाग ले चुके थे, जिसके विषय में आपने इकाई 23 में पढ़ा है।

रैडक्लिफ–ब्राउन ने रिवर्स के मार्गदर्शन में क्षेत्रीय शोधकार्य शुरू किया। उसके अध्ययन का पहला क्षेत्र अंडमान द्वीपसमूह था। इस प्रकार रैडक्लिफ–ब्राउन ब्रिटिश वैज्ञानिक नृशास्त्र की आनुभाविक परंपरा में शामिल हो गया। इस काल में हुए अनुभवों का प्रभाव रैडक्लिफ–ब्राउन के सभी कामों पर जीवन पर्यन्त बना रहा।

"द एलिमेंट्री फार्म्स ऑफ़ द रिलिजस लाइफ़" नामक एमिल इर्खाइम की महत्वपूर्ण कृति ने ब्रिटिश विद्वानों को अत्यधिक प्रभावित किया। रैडक्लिफ–ब्राउन उनमें से एक था। आइयें देखें कि वह इर्खाइमीय विचारधारा की ओर क्यों आकृष्ट हुआ।

1.2.2 दर्खाइमीय परम्पराः रैडक्लिफ–ब्राउन में बौद्विक परिवर्तन

इस पाठ्यक्रम के खंड़ 3 में एमिल इर्ख़ाइमीय परंपरा ने वैज्ञानिक पद्वति दी। साथ में इस धारणा की पुश्टि की कि सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित होता है जिसका बखूबी विश्लेशण किया जा सकता है और जो किसी हद तक वैयक्तिक भावनाओं से परे होता है। दर्खाइम को पूरी आस्था थी कि मनुष्य के लिए एक पूर्णतया व्यवस्थित समाज में एक ऐसा जीवन जीना संभव होगा जिसमें व्यक्ति तथा समाज दोनों का महत्व होगा। ऐसा समाज 'सावयवी एकात्मता' पर आधारित होगा। (शब्दावली देखे)

जैसा कि आपको मालूम है कि दइर्ख़ाइम "सामाजिक तथ्यों" का अध्ययन समाजशास्त्रीय पद्वति से करने के पक्ष में था। वह बिना किसी पूर्वाग्रह के निश्पक्ष रूप से इन तथ्यों का अध्ययन करने की बात करता था। उस के विचार में समाज वस्तुतः एक प्रकार की नैतिक व्यवस्था है। सामूहिक चेतना (collective consciousness) की अवधारणा उसके अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग है। दर्ख़ाइम समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान की ही तरह निश्पक्ष और ठोस विज्ञान के रूप में विकसित करना चाहता था। इन सभी विचारों ने रैडक्लिफ–ब्राउन को आकृष्ट

किया। दर्ख़ाइमीय समाजशास्त्र तथा रैडक्लिफ–ब्राउन का सामान्य विज्ञान के लिए आकर्षण, दोनों के योग से रैडक्लिफ–ब्राउन के मन में भविष्य के लिए आदर्श समाज की संकल्पना उभरी।

संक्षेप में दर्खाइमीय परंपरा का रैडक्लिफ–ब्राउन के अध्ययनों पर यह प्रभाव पड़ा कि यह नृजाति विवरणशास्त्री (मजीदवहतंचीमत) से समाजशास्त्री बन गया। रैडक्लिफ–ब्राउन ने विभिन्न समाजों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के साथ–साथ इस जानकारी का समाजशास्त्रीय ढंग से विश्लेषण करने का प्रयास किया। आइए, अब हम रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित सामाजिक संरचना की महत्वपूर्ण अवधारणा का अध्ययन करें। लेकिन उससे पहले बोध प्रश्न के उत्तर लिखिए।

बाक्स 1.1 रैडक्लिफ–ब्राउन

अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रैडक्लिफ–ब्राउन (17जनवरी 1881–24 अक्टूबर 1955) एक अंग्रेजी सामाजिक मानवषास्त्री थे। जिन्होने संरचनात्मक प्रकार्यावाद को विकसित किया। उनकी पढ़ाई किंग एडवर्ड स्कूल, बर्मिंधम, एवं ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज (स्नातक, 1905; स्नातकोत्तर, 1909) से हुई। उन्होने डब्लूय.एच.आर.रीवर्रस के तहत मनोविज्ञान का अध्ययन किया जो बाद में ए.सी.हेडन साथ उन्हे सामाजिक मानवषास्त्र की दिषा में ले गये। इनसे प्रभावित होकर रैडक्लिफ–ब्राउन ने अंडमान द्वीप समूह (1906–1908) और पष्चिमी ऑस्ट्रेयाई (1910–1912, में जीव विज्ञानी और लेखक ई. एल.ग्रांट वाटसन और आस्ट्रेयाई लेखक डेजी बेट्स के साथ) की यात्रा की, ताकि वहाँ के समाजों की कार्यप्रणाली में अध्ययन किया जा सके।

अंडमान द्विप समूह और पष्चिमी ऑस्ट्रेलिया में उनका अनुभव उनकी बाद के लेखन/पुस्तकों 'द अंडमान आइलैंडर्स (1922) एवं 'द सोशल ऑर्गनाइजेषन ऑफ आस्ट्रेलियन ट्राइब्स' (1930) का आधार था।

बोध प्रश्न 1

क) ....और ....प्रसिद्व 'टोरेस स्ट्रट्स' अभियान में भाग लिया था।

ख) रैडक्लिफ–ब्राउन ने अपना पहला क्षेत्रीय शोधकार्य कहाँ किया था ....

ग) किस श्रमपूर्वक वैचारिक योगदान के प्रति आकर्षित थे............................

1.3 रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित सामाजिक संरचना की अवधारणा

रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार किसी भी विज्ञान के लिये संबद्व अवधारणाओं की आवश्यकता होती है। इन अवधारणाओं को परिभाषिक शब्दावलियों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है जिनका कि उस विषय के सभी विद्यार्थियों द्वारा एक ही अर्थ लिया जाता है। उदाहरण के लिये, भौतिक शास्त्रियों द्वारा परमाणु (tom), अणु (molecule), दहन (combustion) आदि षब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। इन शब्दावलियों का अर्थ और प्रयोग विद्यार्थी के लिए एक ही होता है। क्या यही बात

समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र पर भी लागू होती है? रैडक्लिफ–ब्राउन ने माना कि समाजशास्त्रीय लेखन में भी विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग विभिन्न लेखकों द्वारा एक ही अर्थ में किया जाता है। दूसी ओर, कई शब्दों का प्रयोग बिना किसी पूर्वनिश्चित अर्थों के साथ भी किया जाता है। यह स्थिति इस विज्ञान (समाजशास्त्र) की अपरिपक्वता की सूचक है।

उसका कहना है, कि अध्ययन किये जाने वाले आनुभाविक तथ्यों की प्रकृति को बराबर ध्यान में रखकर अस्पष्ट और अवैज्ञानिक बोध से बचा जा सकता है। सभी अवधारणाओं और सिद्वांतों का यथार्थ से संबंध होना आवश्यक है। रैडक्लिफ–ब्राउन (1958:67) के अनुसार ''एक विशिष्ट क्षेत्र और समयावधि में सामाजिक जीवन की प्रक्रिया ही वह आनुभाविक यथार्थ है जिसका नृशास्त्रीय विवरण, विश्लेषण और तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।" 'सामाजिक जीवन की प्रक्रिया' से हमारा क्या अर्थ है? इसके अंतर्गत मनुष्य के विभिन्न कार्यकलाप, विशेषकर सामूहिक क्रियाएं और अंतः क्रियाएं आते हैं। उदाहरण के तौर पर ग्रामीण भारत में कृषि संबद्व कार्यकलाप सामूहिक कार्य हैं। युवा और महिला मंडलों और सहकारी संस्थाओं में भी सामूहिक क्रिया होती है।

सामाजिक जीवन का विवरण देने के लिए सामाजिक नृशास्त्री कार्यकलापों की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख करते है। उदाहरण के लिए ग्रामीण भारत में कृशि संबद्व कार्यों का विवरण करते हुए समाजशास्त्री द्वारा कुछ सामान्य विशेषताओं को दर्शाने का प्रयास होता है, जैसे, विभिन्न कार्य कब, कहां और किसके द्वारा किये जाते है? बीज बोने, फसल काटने और बेचने में कौन से व्यक्ति एक दूसरे का सहयोग करते है? कृषि मज़दूरों का गठन, कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका आदि जैसी विशेषताओं का उल्लेख भी समाजशास्त्रियों द्वारा किया जा सकता है। इसी प्रकार का सामान्य विवरण ही विज्ञान की आधार सामग्री होता है। इसे कई तरह से प्राप्त किया जा सकता है, जैसे कि सहभागी प्रेक्षण (participant observation) से, ऐतिहासिक विवरणों आदि से।

क्या ये सामन्य विशेषताएं समय के साथ बदलती है? हाँ। और अलग–अलग विशेषताएं अलग–अलग गति से बदलती है। पहले दिये गये उदाहरण को ही ले। इसमें यह देखा जा सकता है कि समय के साथ–साथ कृषि संबद्व कार्यो में अनेक परिर्वतन आये है। आज जब चाहो कृशि मज़दूर सरलता से नही मिलते है। अब व पहले की तरह क्रूर शोषण को सहते नही है। मशीनों, रासयानिक खादों और कीटाणु नाशक दवाइयों का अधिक उपयोग किया जा रहा है। इन परिवर्तनों के बावजूद यह भी तथ्य है कि देश के ज्यादातर भागों में महिलाएं आज भी कृषि के क्षेत्र में बहुत श्रम करती है। उनके योगदान को पहचाना तक नही जाता है। समय के साथ–साथ होने वाले परिवर्तन को ध्यान में रखकर विवरण देने वाले अध्ययन को डायक्रानिक विवरण कहा जाता है, जबकि सिंक्रानिक विवरण वह है जिसमें विशिष्ट समयावधि में पाई जाने वाली सामाजिक जीवन की विशेषताओं पर जोर दिया जाता है। रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार तथ्यपरक स्पष्ट अवधारणाएं सामाजिक नृशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में विकसित करने में सहायता देती है। साथ ही ये सिंक्रानिक और डायक्रानिक व्याख्या के आधार पर सामाजिक जीवन को समझने में मदद देती है। इस संदर्भ में सामाजिक संरचना की अवधारणा महत्वपूर्ण

हो जाती है। जो सामाजिक संबंधो के पूरे जाल को व्यवस्थित तरीके से देखने में हमारी मदद करता है। इस प्रकार, हम समाज के कार्य करने और एकीकृत रहने के तरीके में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते है।

1.3.1 सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन

रैडक्लिफ–ब्राउन(1958: 68) का कहना है कि सामाजिक संरचना की अवधारणा से हमें एक बड़ी समग्रता के विभिन्न भागों की व्यवस्था तथा उनके आपसी संबंधो का बोध होता है। यदि मनुष्य शरीर की संरचना देखी जाये तो पहली नज़र में मनुष्य षरीर विभिन्न उत्तक (tissues) और अंगो (organs) का योग प्रतीत होता है। यदि और गहराई से देखा जाये तो स्पष्ट है कि इसके मूल तत्व है सामाजिक संरचना है। उदाहरण के लिए भारतीय सामाजिक जीवन की व्यवस्था प्रायः विभिन्न जातियों के रूप में पाई जाती है। अतः जाति–व्यवस्था को भारतीय सामाजिक जीवन की संरचनात्मक विशेषता कहा जा सकता है।

इसी तरह एक परिवार की संरचना का बोध परिवार के बच्चों, माता–पिता, दादा–दादी आदि के बीच परस्पर संबंधों से होता है। रैडक्लिफ–ब्राउन के लिए संरचना एक अमूर्त कल्पना न होकर एक आनुभाविक तथ्य है। सामाजिक संरचना की अवधारणा का प्रयोग विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न तरीकों से किया जाता है। कोष्ठक 1.1 में आपको इस संबंध में और अधिक जानकारी दी गई है।

कोष्ठक 1.1: सामाजिक संरचना की अवधारणा

द्वितीय विश्व युद्व के उपरांत वाले दशक के दौरान सामाजिक नृशास्त्र में सामाजिक संरचना की अवधारणा बहुत लोप्रिय हो गई थी। यों तो इस अवधारणा का इतिहास काफी पुराना है तथा इसका प्रयोग विभिन्न विद्वानों ने अलग–अलग ढंग से किया है। यहां इसके तीन अर्थो की चर्चा की जा रही है।

1. अंग्रेज़ी भाषा में 'संरचना' शब्द का अर्थ भवन निर्माण से है। प्रारभिक मार्क्सवादी साहित्य में संरचना की अवधारणा का प्रयोग इमारत बनाने के रूप में ही किया गया है। मार्क्स ने उत्पादन के संबंधों को आर्थिक संरचना का तत्व बताया था। मार्क्स एवं एंजल्स दोनों ही विकासवादी विद्वान मॉर्गन की पुस्तक सिस्टम्स ऑफ़ कॉन्सन्गुइनिटि एण्ड अफिनिटि से बहुत प्रभावित थे और यह पुस्तक आज भी सामाजिक संरचना का पहला समाजशास्त्रीय अध्ययन माना जाता है।

2. सोलहवीं सदी तक संरचना शब्द का प्रयोग शरीर विज्ञान (anatomy) में किया जाने लगा था। हर्बर्ट स्पेंसर के विचार में समाज को एक शरीर की उपमा से समझा जा सकता है और स्पेंसर को ही संरचना तथा प्रकार्य जैसे शब्दों को समाजशास्त्र में लाने का श्रेय है। यही उपमा हमें दर्खाइम के लेखन में भी मिलती है। दर्खाइम से रैडक्लिफ–ब्राउन ने अनेक विचार लिए थे और यह विचार भी उसने यहीं से लिया। रैडक्लिफ–ब्राउन का अनुसरण करते हुए इवंस प्रिचर्ड, फोर्टीस एवं फोर्ड ने समाज के कुछ पक्षों पर विशेष ध्यान दिया जैसे राजनीतिक संरचना, नातेदारी की संरचना आदि।

3. फ्रेंच संरचनावादी लवि–स्ट्रॉस के लेखन में हमें संरचना की अवधारणा का एक अन्य आयाम देखने को मिलता है। उसने संरचना का अपना बोध भाषा–शास्त्र से लिया है एवं उसके लिए संरचना की अवधारणा एक अमूर्त एवं विश्लेषणीय मॉडल है जिसकी तुलना से कुछ नियमितताएं अथवा निश्चित विन्यास परिलक्षित होते हैं जिनकी व्याख्या समाजशास्त्री द्वारा की जाती है।

प्रश्न यह उठता है कि सामाजिक जीवन की संरचनात्मक विशेषताओं का कैसे पता लगाया जाये? रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार हर प्रकार के सामाजिक समुदायों को खोज कर उनकी संरचना का परीक्षण करना ज़रूरी है। इन समुदायों के अंदर लोग–– वर्गों, श्रेणियों, जातियों आदि में विभाजित होते है। रैडक्लिफ–ब्राउन के

मतानुसार सबसे महत्वपूर्ण संबंध एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच का युग्मीय (dyadic) संबंध हैं, जैसे–– मालिक –नौकर, मामा–भांजे के संबंध। सामाजिक संरचना का स्पष्ट बोध तभी होता है जब व्यक्तियों या समूहों के बीच अंतः संबधों को देखा जाये। सामाजिक संरचना की अवधारणा पर प्रथम दृश्टि डाल कर आइए अब यह देखें कि रैडक्लिफ–ब्राउन का सामाजिक संगठन से क्या तात्पर्य है। अभी हमने देखा संरचना का अर्थ व्यक्तियों के बीच स्थापित व्यवस्था है। संगठन से क्या तात्पर्य गतिविधियां (aactivities) की व्यवस्था से है। उदाहरणतः आपने इस खंड को पढ़ने के लिए अपनी गतिविधियां संगठित की होंगी। जैसे कि पहले किसी विशेष भाग को पढ़ना फिर प्रश्नों के उतर ढूंढना, जहां आवश्यक हो शब्दावली को देखना आदि। यह व्यक्तिगत स्तर पर गतिविधियों को संगठित करना दिखाता है। इसी प्रकार रैडक्लिफ–ब्राउन (1958: 169) के अनुसार सामाजिक संगठन "दो या दो से अधिक व्यक्तियों की क्रियाओं की वह व्यवस्था है जिससे सामूहिक क्रियाएं संभव होती हैं"। उदाहरण के लिए क्रिकेट टीम में बल्लेबाजों, गेंदबाजों, खेल के मैदान में दौड़ने वालों और विकेट–कीपर की सम्मिलित क्रियाओं से ही खेल संभव होता है।

समाजिक संरचना और संगठन की अवधारणाएं स्पष्ट करने के लिए रैडक्लिफ–ब्राउन ने आधुनिक सेना का उदाहरण दिया है। सामाजिक संरचना में सबसे पहले व्यक्तियों को समूहों में विभाजित किया जाता है जैसे कि सेना में 'डिवीजन', 'रेजीमेंट', आदि समूह होते है। इन समूहों की अपनी आंतरिक व्यवस्था होती है, जैसे सेना में 'रैंक' या पद, के अनुसार 'कॉर्पोरल', 'ब्रिगेडियर' आदि। सेना का संगठन उसके विभिन्न कार्यो के विभाजन के माध्यम से देखा जा सकता है। इनमें से कुछ कार्य हैं देश की सीमाओं पर तैनात रहना, राष्ट्रीय संकट में सरकार की सहायता करना आदि। इस बिंदु पर सोचिये और करिये 1 को पूरा कीजिए।

1.3.2 सामाजिक संरचना और सामाजिक संस्थाएं

जैसे कि आपको स्पष्ट हो चुका है, सामाजिक संबंध ही सामाजिक संरचना का आधार है। सामाजिक संबंध मूलतः इस अपेक्षा पर आधारित है कि व्यक्ति कुछ प्रतिमानों या नियमों का पालन करेगें। समाज द्वारा माने गये नियम और तरीकों की प्रणालियों को 'संस्था' कहा जाता है। ये संस्थाएं सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबद्व है। उदाहरण के तौर पर समाज की परिवार संबद्व संस्थाएं कुछ विशिष्ट तौर तरीकों को सामने रखती हैं जिनको मानना परिवार के सदस्यों के लिये अनिवार्य है, जैसे हमारे समाज में यह अपेक्षित है कि बच्चे माँ–बाप का आदर करें, दूसरी ओर बूढ़ों का पालन–पोशण माँ–बाप की जिम्मेदारी है।

सोचिये और करिये।

निम्नलिखित में से किसी एक की संरचना और संगठन के विषय में दो पृष्ठ का लेख लिखें। 1) अस्पताल 2) ग्राम पंचायत 3) नगर पालिका। यदि संभव होता तो अपने लेख की तुलना अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के लेखों से करें।

रैडक्लिफ–ब्राउन (1958: 175) के अनुसार संस्थाएं "व्यक्ति के और उसके प्रति दूसरों के अपेक्षित बर्ताव को परिभाशित करती है"। लेकिन कई बार लोग इन नियमों का उल्लंघन भी करते है। इससे निपटने के लिये अनेक प्रतिबंध (sanctions) होते है। रैडक्लिफ–ब्राउन मानता है कि सामाजिक संरचना का वर्णन उन संस्थाओं के संदर्भ में करना होगा जो व्यक्तियों और समूहों के संबंधों को नियमित करती है। रैडक्लिफ–ब्राउन (1958: 175) कहता है कि "क्षेत्र विशेष के सामाजिक जीवन की संरचनात्मक विशेषताएं संस्थागत संबंधों की व्यवस्था में दृष्टिगत होती है। यह व्यवस्था व्यक्तियों द्वारा किए कार्यो तथा अंतः कार्यो में निहित होती है एवं इन्ही से सामाजिक जीवन की समग्रता का आभास होता है"।

1.3.3 संरचनात्मक निरंतरता (structural continuity) और संरचनात्मक रूप (structural form)

रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना के निर्माण में व्यक्तियों तथा उनके बीच संबंधों का हाथ होता है। तो क्या यह समझा जा सकता है कि व्यक्ति विशेष की मृत्यु के साथ 'संरचना' भी नष्ट हो जाती है? नहीं, ऐसा नहीं होता है। व्यक्ति विशेष पैदा होते है और मर जाते हैं परन्तु सामाजिक संरचना बनी रहती है। सामाजिक समूहों, वर्गो और जातियों के सदस्य सदैव बदलते रहते है। जहाँ एक ओर कुछ सदस्यों कि मृत्यु हो जाती है तो वहीं नये सदस्य जन्म भी लेते है। उदाहरण के तौर पर लोक सभा के कई सदस्य मरते है या इस्तीफा देते है या फिर अगला चुनाव हार जातें है, लेकिन शीघ्र ही नये सदस्य उनकी जगह ले लेते है। जनजातियों में मुखिया की मृत्यु के बाद उसका उतराधिकारी उसकी जगह लेता है।

इस संदर्भ में यह स्पष्ट करना ठीक रहेगा कि रैडक्लिफ–ब्राउन सामाजिक संरचना और संरचनात्मक रूप के बीच अंतर देखता है। सामाजिक संरचना में हमेंशा अदल बदल की स्थिति बनी रहती है। जन्म और मृत्यु द्वारा समूहों के सदस्य बदलते रहते है। रैडक्लिफ–ब्राउन मानता है कि सामाजिक संरचना में गतिमानता होते हुए भी समाज के संरचनात्मक रूप में काफी स्थायित्व होता है। समाज का संरचनात्मक रूप समाज के माने हुए तौर तरीकों और नियमों में प्रतिबिंबित होता है। व्यक्ति आते हैं और चले जाते हैं परंतु ये तौर तरीके कायम रहते है। संरचनात्मक रूप की स्थिरता उसके विभिन्न अंगों के आपस में सुव्यवस्थित रूप से जुड़े होने पर निर्भर करती है। समाज के कई अंग हैं उदाहरणतः परिवार, शिक्षा व्यवस्था, राजनैतिक व्यवस्था आदि। इन अंगों के विशिष्ट कार्य है बच्चों का पालन पोशण। षैक्षिक संस्थाएं प्रशिक्षण प्रदान करती है, राजनैतिक व्यवस्था सरकार चलाती है। इन प्रकार्यो के संबंध में रैडक्लिफ–ब्राउन के विचार अगली इकाई में विस्तृत किये गये है। संक्षेप में 'सामाजिक संरचना' रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित एक महत्वपूर्ण सामाजिक नृशास्त्रीय अवधारणा है। इस अवधारणा से अनुभवसिद्व तथ्यों के आधार पर समाज के सदस्यों के पारस्परिक संबंध और उनके गठन का अध्ययन किया जा सकता है।

यहाँ समाज में पाए जाने वाल संगठन की चर्चा आवश्यक है। दूसरे षब्दों में लोग अपने कार्य–कलापों को कैसे संगठित करते है। सामाजिक संरचना के अध्ययन में सामाजिक संस्थाओं को लिया जाता है। ये समाज द्वारा माने गये नियमों और तौर

तरीकों की परिभाशा देती है। सामाजिक संरचना में सदैव गतिमानता बनी रहती है, परंतु जैसा हमने ऊपर देखा संरचनात्मक रूप में काफी हद तक स्थापित्व बना रहता है। यह स्थायित्व तब तक बना रहता है जब तक समाज के विभिन्न अंग अपने—अपने प्रकार्य, प्रभावशाली रूप से करते रहते है।

समाजिक संरचना के संबधं में हमारी अब तक की चर्चा काफी अमूर्त (abstract) रही है। इन विचारों को उदाहरण द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। रैडक्लिफ—ब्राउन ने क्षेत्रीय अध्ययन के लिये विश्व के अनेक भागों की यात्रा की जैसे कि अंडमान द्वीपसमूह, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया। रैडक्लिफ—ब्राउन ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की जनजातियों की संरचनात्मक व्यवस्था का अध्ययन किया था। अब उसकी चर्चा की जायेगी। इससे साफ़ दिखाई देगा कि किस प्रकार सामाजिक संबधं सामाजिक संरचना को रूप देते है। इसके पहले हम पश्चिमी आस्ट्रेलिया की जनजातियों की सामाजिक संरचना पर रैडक्लिफ—ब्राउन के विचार पढ़कर सामाजिक संरचना की अवधारणा को पूरी तरह से समझे। आपको बहुत संक्षेप में, आइए यह बाद दें कि स्वयं रैडक्लिफ—ब्राउन भी अपनेल लेखन में कभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं कर पाया कि उसके विचार में 'सामाजिक संरचना' तथा 'संरचनात्मक रूप' में आखिर अंतर क्या है। बहुधा तो ऐसा ही लगता है कि उसके लिए समाज के संरचनात्मक रूप तथा सामाजिक संगठन एक ही अवधारणाएं है। यही कारण है कि हमने संरचनात्मक रूप की विशेष चर्चा न कर अब एक उदाहरण के माध्यम से रैडक्लिफ—ब्राउन की सामाजिक संरचना की अवधारणा को समझाने का निश्चय किया है।

चर्चा के उपरोक्त बिंदुओं को आत्मसात करने हेतु बोध प्रश्न 2 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर पाँच पंक्तियों में लिखे।

क) 'सामाजिक संरचना' और 'सामाजिक संगठन' से रैडक्लिफ—ब्राउन का क्या तात्पर्य है?

....

....

....

....

ख) सामाजिक 'संस्थाएं' क्या है? उदाहरण सहित उत्तर दें।

....

....

....

....

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

2) निम्नलिखित वाक्यों में सही या गलत में किसी एक कोष्ठक को चुने।

   क) लोग संस्थाओं का उल्लंघन कभी नहीं करते है। सही / गलत

   ख) सामाजिक संरचना स्थिर होती है जबतक संरचनात्मक रूप अस्थिर होता है। सही / गलत

   ग) रैडक्लिफ–ब्राउन का मानना है कि सामाजिक नृशास्त्र स्पष्ट अवधारणाओं को विकसित करके ही एक विज्ञान बन सकता है। सही / गलत

1.4 पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में संरचनात्मक व्यवस्था

इस भाग में रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा दिये गये इन जनजातियों की सामाजिक संरचना के आधार का उल्लेख किया जा रहा है।

1.4.1 क्षेत्रीय आधार

रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार भू–भाग का क्षेत्रीय या प्रांतीय विभाजन ही पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के जनजातीय समाज की संरचना का प्रमुख आधार था। जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक पुरूश किसी एक विशिष्ट क्षेत्र का वासी माना जाता था। उसके बेटे और पौते इस क्षेत्रीय पहचान के उतराधिकारी बनते थे। एक विशिष्ट क्षेत्र विशेष से संबंधित पुरूशों के योग से 'कुल' (clan) बनता था जो सामाजिक संरचना में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। दूसरे, महिलाओं का क्या स्थान था? लड़की अपने पिता के कुल की सदस्य मानी जाती थी। क्योकि कुल से बाहर विवाह होने का कठोर नियम था। अतः लड़की को अपने कुल को छोड़कर दूसरे कुल में पुरूश से विवाह करना पड़ता था।

कुल के पुरूश उनकी पत्नियाँ और बच्चे मिलकर जिस समूह का निर्माण करते थे उसे दल या झुंड (horde) कहते थे। हल दल का अपना विशिष्ट क्षेत्र होता था। आर्थिक और राजनैतिक स्तरों पर दल एक आत्मनिर्भर इकाई थी। इसमें बुजुर्गों की सता होती थी। हर दल की जनसंख्या सीमित हुआ करती थी। इसमें पचास से ज्यादा सदस्य नहीं होते थे। हर दल एकल (nuclear) परिवारों में विभाजित था। हर परिवार का अपना घर और चूल्हा होता था। परिवार पुरूश प्रधान था; पुरूश की मृत्यु के बाद परिवार बिखर जाता था। जहाँ एक ओर परिवार एक अस्थायी इकाई था वहीं दूसरी ओर कुल एक स्थायी इकाई थी। दल अस्थिर स्थिति में रहता था। पुरुष इसके केन्द्र थे, परंतु विवाह के माध्यम से स्त्रियाँ इसमें आती थी और इससे बाहर जाती थी। संक्षेप में, किसी विशिष्ट क्षेत्र या प्रान्त के पुरूशों से 'कुल' संगठित होता था। कुल के पुरूशों, उनकी पत्नियों और बच्चों से 'दल' निर्मित होता था।

1.4.2 जनजातियाँ

समान रीति–रिवाज और भाषा वाले कुलों से एक जनजाति बनती थी। रैडक्लिफ–ब्राउन इस बात पर ध्यान आकृष्ट करता है कि कुछ अन्य क्षेत्रों से विपरीत, ये जनजातियां राजनैतिक रूप से एक नहीं थी, न ही वे किसी सामूहिक कार्य में इकट्ठे होकर शामिल होती थी। नातेदारी के माध्यम से ही विभिन्न

जनजातियाँ और दल एक दूसरे से जुड़े थे। रैडक्लिफ–ब्राउन के शब्दों में नातेदारी की संरचना से विभिन्न व्यक्तियों के बीच युग्मीय (dyadic) संबंध स्थापित होते थे। अपनी माँ के माध्यम से व्यक्ति विशेष का माँ के कुल और उस कुल के सदस्यों से जुड़ाव रहता था। वह कभी भी उनके क्षेत्र में प्रवेश कर दल के साथ रह सकता था। इसके बावजूद कि वह न ही उस कुल का सदस्य था और न ही कभी बन सकता था वह सदा माँ के दल के क्षेत्र में जाने के लिए स्वतंत्र था। इस प्रकार एक कुल विशेष के विभिन्न व्यक्ति दूसरे कुलों से जुड़े रहते थे। इसी तरह ही व्यक्ति पुरूशवाचक अपनी नानी, अपनी पत्नी के कुलों से भी जुड़ा होता था। साथ ही वह उन कुलों से भी संबद्व था जिनमें उसकी बहनों का विवाह होता था। इस प्रकार नातेदारी की संरचना के अंतर्गत नाना प्रकार के और बहुविधीय सामाजिक संबंध शामिल थे।

1.4.3 'मोइटी' (moieties)

इस अनुभाग को धीरे–धीरे और ध्यानपूर्वक पढ़ें, क्योंकि इसमें अनेक अपरिचित और जटिल बाते है। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया जनजातीय समाज दो 'मोइटी' में विभाजित था। समाज जिन दो बड़े समूहों में बाँटा जाता है उन्हे 'मोइटी' कहते है। प्रत्येक जनजाति दो में से किसी एक मोइटी में शामिल होती है। आइए, यहाँ हम इन मोइटियों को I और II कहें। दूसरी ओर, समाज का विभाजन दो एकांतरित पीढ़ियों (alternating generations) के संदर्भ में भी होता है। आइए इन एकांतरित पीढ़ियों को 'क' और 'ख' कहें। यदि आप के पिता 'क' पीढ़ी के सदस्य हैं, तो आपकी 'ख' पीढ़ी होगी और आपके बच्चे 'क' में आएगे। इस तरह हर कुल में दोनों पीढ़ियों के व्यक्ति पाए जाते हैं।

इस प्रकार समाज चार भागों (sections) में बाँटा जाता है; ये हैं I क, I ख, II क और II ख I इन भागों के कुछ नामों का उल्लेख रैडक्लिफ–ब्राउन ने किया है: उदाहरण के लिश्ये 'बनाका' 'बुरोंग', कारिमेरा' और 'पाल्डजेरी'।

जनजातीय नियमों के अनुसार विवाह विपरीत मोइटी और समान पीढ़ी के व्यक्तियों के बीच ही हो सकता है। इस प्रकार ख के पुरूष का विवाह ख की महिला से ही हो सकता है। उदाहरण के लिये 'करीरा' जनजाति में 'बनाका' भाग के पुरूश का विवाह 'बुरांग' स्त्री से ही हो सकता है।

सोचिये और करिये 2

किन्ही पाँच शादी–शुदा रिश्तेदारों का चयन करें (जैसे कि माँ, भाई/बहन, मामा का बेटा/बेटी, चाचा का बेटा/बेटी आदि।) इनके जीवन–साथी कैसे चुने गये थे? क्या दोनो परिवारों में पहले से ही कोई नाता रहा है? अपने जाँच–परिणाम लिखें और यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों के जाँच परिणामों से इनकी तुलना करें।

1.4.4 टोटम समूह

समाजिक संरचना का एक और आधार टोटम है। टोटम–केन्द्र, मिथक, अनुष्ठान आदि होते हैं। टोटम की मान्यता से समूह को एकता और स्थायित्व मिलता है।

रैडक्लिफ–ब्राउन ने यह दिखाया है कि किस प्रकार टोटम से जुड़े समारोहों के दौरान, जैसे कि लड़कों का दीक्षा समारोह, कई कुल एक साथ मिलकर काम करते है। इन सहकारी कुलों का एक होना उनके समाज की धार्मिक–संरचना की पहचान है। समारोहों में सहकारिता के फलस्वरूप राजनैतिक एकता भी उत्पन्न होती है, क्योकि ये कुल अपने मतभेद भुलाकार आपसी विश्वास और मित्रता के आधार पर ही एक दूसरे को सहयोग देते है।

इस विवरण से क्या निष्कर्ष निकलता है? स्पष्ट है कि रैडक्लिफ–ब्राउन के इस संरचनात्मक विवरण से अनेक महत्वपूर्ण मुदे हमारे सामने आ जाते है। जैसे, संरचनात्मक विवरण के दौरान सामाजिक समूहों (जैसे कि परिवार, कुल, दल) को समझने के साथ–साथ पारस्परिक सामाजिक संबंधों पर ध्यान देना आवश्यक होता है। ऑस्ट्रेलिया के आदिवासी समाज में नातेदारी व्यवस्था के अपने अध्ययन में रैडक्लिफ–ब्राउन ने यही किया है। यद्यपि रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित समाजिक संरचना की अवधारणा की आलोचना हुई है कि यह अवधारणा बहुत सामान्य (general) है। परन्तु रैडक्लिफ–ब्राउन ने अपने अध्ययन में इसका सफल उपयोग किया है। उसने सामाजिक जीवन के रूप (form) पर ध्यान केन्द्रित किया और देखा कि सामाजिक जीवन कैसे संगठित होता है। इस तरह उसने मलिनॉस्की द्वारा किये गये अत्यंत व्यक्तिपरक विरण को नई दिशा दी और सामाजिक पक्ष की व्याख्या पर अधिक ज़ोर दिया।

अब समय है बोध प्रश्न 3 को हल करने का।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित के सही मेल बनाइए

क)	बुरोग	I)	भाषा पर आधारित समूह
ख)	जनजाति	II)	आर्थिक और राजनैतिक आत्मनिर्भरता
ग)	कुल	III)	क्षेत्रीय पहचान
घ)	दल	IV)	करीरा जनजाति

1.5 सारांश

इस इकाई का विषय था– रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा विकसित 'सामाजिक संरचना' की अवधारणा। सबसे पहले हमने उन बौद्विक प्रभावों की चर्चा की जिन्होंने रैडक्लिफ–ब्राउन के सामाजिक नृशास्त्र को अपनी विशेष पहचान या अस्मिता प्रदान की। इस संदर्भ में हमने क्षेत्रीय शोधकार्य और दर्खाइमी–परंपरा का उल्लेख किया।

इस इकाई के मुख्य विषय पर चर्चा करते हुए हमने सामाजिक संरचना और सामाजिक संगठन की व्याख्या की। सामाजिक संस्थाओं, जो संरचनात्मक विवरण के महत्वपूर्ण अंग है, पर भी ध्यान दिया गया। हमने यह भी देखा कि किस तरह सामाजिक संरचना में एक साथ परिवर्तनशीलता और निरंतरता है। इस संदर्भ में हमने समाज के संरचनात्मक रूप की चर्चा की।

इन विचारों को स्पष्ट करने के लिये हमने रैडक्लिफ–ब्राउन द्वारा प्रस्तुत पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई जनजातियों के संरचनात्मक विवरण पर नजर डाली। क्षेत्र, जनजाति, 'मोइटी', 'टोटम', जैसे संरचनात्मक आधारों की हमने चर्चा की।

1.6 संदर्भ

कूपर, एडम, 1975. एंथ्रोपोलिजिस्ट्स एण्ड एंथ्रोपोलोजीः दि ब्रिटिश स्कूल 1922–72. पेंगुइन बुक्सः लंदन

रैडक्लिफ–ब्राउन, ए.आर., 1958. सोशल स्ट्रक्चर. एम.एन.श्रीनिवास (सं.) मेथड इन सोशल एंथ्रोपॉलोजी. युनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेसः शिकागो

1.7 बोध प्रश्नों के उतर

बोध प्रश्न 1

क) रिवर्स एंव हेडोन

ख) अंडमान द्वीप समूह

ग) दर्खाइम

बोध प्रश्न 2

क) रैडक्लिफ–ब्राउन के अनुसार सामाजिक संरचना समाज के व्यक्तियों के अंतर्सबंधों की रचना है। सामाजिक संगठन से उसका मतलब है वे कार्य या गतिविधियाँ को समूह विशेष करता है और उनको गठित करने का ढंग भी इसी में शामिल है।

ख) सामाजिक संस्थाएं पारस्परिक संबंधों को मानने के लिए समाज द्वारा दिये गये तौर–तरीको का योग है। किसी संबंध को बनाने में व्यक्तियों की आपसी अपेक्षाएं भी इसमे शामिल होती है। उदाहरण के तौर पर स्कूल की कक्षा में यह अपेक्षित है कि शिक्षक पाठ पढ़ाये और विद्यार्थी ध्यान दे।

क) ग़लत

ख) ग़लत

ग) सही

बोध प्रश्न 3

क) iv)

ख) i)

ग) iii)

घ) ii)